



विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस: कार्यस्थल पर मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देना



विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस प्रत्येक वर्ष 10 अक्टूबर को मनाया जाता है। इसकी शुरुआत सबसे पहले 1992 में विश्व मानसिक स्वास्थ्य महासंघ (डब्ल्यूएफएमएच) द्वारा की गई थी। वैश्विक स्तर पर इस आयोजन का उद्देश्य मानसिक स्वास्थ्य मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाना और दुनिया भर में मानसिक स्वास्थ्य देखभाल के लिए किये जा रहे प्रयासों में एकजुटता लाना है। पिछले कुछ वर्षों में, सरकारों, संगठनों और व्यक्तियों के लिए मानसिक स्वास्थ्य देखभाल के क्षेत्र में स्थायी बदलाव लाने वाली पहलों में सहयोग के लिए यह दिन एक महत्वपूर्ण बन गया है। विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस का महत्व, व्यक्तियों, परिवारों और समुदायों में मानसिक स्वास्थ्य के गहन प्रभाव को बढ़ती मान्यता से रेखांकित होता है।

2024 की थीम - कार्यस्थल पर मानसिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और कार्यस्थल के महत्वपूर्ण सम्बंध को उजागर करती है। अनुमान है कि वैश्विक आबादी का 60 प्रतिशत हिस्सा किसी न किसी रूप में रोजगार से जुड़ा है। इसलिए कार्यस्थल पर मानसिक स्वास्थ्य को महत्व देना अनिवार्य हो गया है। खराब कामकाजी परिस्थितियों के कारण मानसिक स्वास्थ्य सम्बंधी महत्वपूर्ण जोखिम सामने आ सकते हैं, जबकि सुरक्षित और समावेशी कार्य वातावरण मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा दे सकता है। कार्यस्थल मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा दे, नुकसान से बचाएँ और उन लोगों का सहयोग करें जिन्हें मदद की जरूरत है, यह सुनिश्चित करने के लिए थोड़ा सामूहिक कार्रवाई करने के महत्व पर जोर देती है।

कार्यस्थल पर मानसिक स्वास्थ्य-

प्रमुख कारक और विचार

मानसिक स्वास्थ्य और काम का आपस में गहरा सम्बंध है- कर्मचारियों के मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने, उनके उद्देश्य सुनिश्चित करने के साथ ही स्थिरता और नैकरी की संतुष्टि प्रदान करने के लिए एक सकारात्मक और सहयोगपूर्ण कार्य वातावरण महत्वपूर्ण है। दूसरी ओर, प्रतिकूल कार्य परिस्थितियों मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती हैं और इससे उत्पादकता और मजबूती में कमी आ सकती है। एक समावेशी और सम्मानजनक कार्यस्थल कर्मचारियों को अधिक प्रेरित करता है। इसके निरपेक्ष, तनाव, भेदभाव, दुर्व्यवहार और सूक्ष्म प्रबंधन के कारण प्रतिकूल वातावरण बन सकता है, जो प्रेरणा और नैकरी से संतुष्टि को कम करता है।

कर्मचारियों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए जोखिम- कर्मचारियों को मानसिक स्वास्थ्य के लिए खराब कामकाजी परिस्थितियों, भेदभाव और सीमित स्वायत्तता जैसे कई तरह के जोखिमों का सामना करना पड़ता है। कम वेतन वाली या असुरक्षित नौकरियों में अक्सर अपर्याप्त सुरक्षा होती है, जिससे इस प्रकार की नौकरियाँ करने वाले कर्मचारियों के लिए मनो-सामाजिक जोखिमों की समस्या बढ़ जाती है, जिससे उनका समग्र कल्याण और अधिक प्रभावित हो सकता है।

कर्मचारियों पर प्रभाव- पर्याप्त सहयोग के बिना, मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों से जुड़े रहे व्यक्तियों में आत्मविश्वास की कमी, काम में मन लगाना और उनके बार-बार अनुपस्थित होने की स्थिति हो सकती है। इसका प्रभाव कार्यस्थल से परे भी देखा जा सकता है, जिससे रोजगार पाने या उसे किए जाने की क्षमता प्रभावित हो सकती है। ये चुनौतियाँ परिवार के सदस्यों और देखभाल करने वालों को भी प्रभावित करती हैं और इससे उनके जीवन में तनाव और बढ़ जाता है।

कार्य और समाज पर व्यापक प्रभाव- कार्यस्थल पर मानसिक स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याएँ केवल व्यक्तिगत कर्मचारियों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इनका व्यापक सामाजिक प्रभाव है। खराब मानसिक स्वास्थ्य के कारण कार्य उत्पादकता में कमी, कर्मचारियों की अनुपस्थिति और कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि हो सकती है। वैश्विक स्तर पर, अक्सर और चिंता प्रत्येक वर्ष लगभग 12 बिलियन कार्यदिवसों के नुकसान का कारण बनते हैं, इससे अनुपचारित मानसिक स्वास्थ्य स्थितियों के आर्थिक



और सामाजिक परिणामों का पता चलता है।

रोजगार में समस्याएँ और बाधाएँ- मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएँ एक महत्वपूर्ण बाधा है जो व्यक्तियों को मदद मांगने और रोजगार बनाए रखने से रोकता है। मानसिक स्वास्थ्य की समस्या से जुड़े रहे लोगों के साथ कार्यस्थल पर भेदभाव उनकी सफलता की क्षमता को प्रभावित कर सकता है। मानसिक स्वास्थ्य की खराब स्थिति वाले कर्मचारियों के साथ जागरूकता कार्यक्रम, प्रशिक्षण और जुड़वाँ अधिक समावेशी, सहयोग कार्य वातावरण में योगदान दे सकते हैं जो इन बाधाओं को दूर करते हैं।

कर्मचारियों को सफल होने में सहायता करना- खराब मानसिक स्वास्थ्य स्थिति वाले कर्मचारी कार्यस्थल पर सफल हो सके, यह सुनिश्चित करने में नियोक्ता महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नियमित सहयोग बैठकें, निर्धारित अवकाश और कार्यों को धीरे-धीरे फिर से शुरू करना और कर्मचारियों की स्थितियों का प्रबंधन करने जैसे उचित समायोजन उन्हें उत्पादक बने रहने में मदद करता है। इलाज की सुविधाओं की पेशकश भी एक महत्वपूर्ण अंतर ला सकती है।

मानसिक स्वास्थ्य सहयोग के लिए प्रबंधकों को प्रशिक्षित करना- नियोक्ताओं को कार्यस्थल पर मानसिक स्वास्थ्य तनावों की पहचान करने और उन्हें दूर करने के लिए प्रबंधकों के प्रशिक्षण में निवेश करना चाहिए। प्रशिक्षित प्रबंधक सकारात्मक और सहयोग कार्य वातावरण को बढ़ावा देने के लिए बेहतर ढंग से तैयार होते हैं, जो तनाव कम करने और कर्मचारियों के बीच मानसिक कल्याण को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है।

सरकारी कार्रवाई और सहयोग- सरकारों, नियोक्ताओं और प्रतिनिधि संगठनों को सार्थक बदलाव लाने के लिए, मानसिक स्वास्थ्य जोखिमों को रोकने और मानसिक कल्याण को बढ़ावा देने वाली नीतियाँ बनाने में सहयोग करना चाहिए। इन प्रयासों का उद्देश्य ऐसे कार्यस्थल का निर्माण होना चाहिए जहाँ मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता मिले और कर्मचारियों के लिए सुरक्षात्मक उपाय किए जाएँ।

अपने मानसिक स्वास्थ्य का ख्याल रखना- कार्यस्थल पर मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए सरकारों और नियोक्ता तो जिम्मेदार हैं ही, लोग भी अपने स्वयं के कल्याण के लिए कदम उठा सकते हैं। तनाव प्रबंधन तकनीक सीखना और मानसिक स्वास्थ्य में होने वाले बदलावों के प्रति सचेत रहना आवश्यक है। जरूरत पड़ने पर किसी विश्वसनीय व्यक्ति या मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ से संपर्क करके आवश्यक सहायता प्राप्त की जा सकती है।

मानसिक स्वास्थ्य- आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24 द्वारा नीतिगत सिफारिशें

भारत, दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाले देशों में से एक है और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से निपटने के लिए कठिन चुनौतियों का सामना कर रहा है। मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं के लिए धन की कमी और मानसिक बीमारी से जुड़े कलंक के मामलों वाली पृष्ठभूमि के साथ, भारत ने मानसिक स्वास्थ्य देखभाल के बुनियादी ढांचे और नीतियों में सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। 22 जुलाई, 2024 को केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारामण द्वारा संसद में पेश

किए गए आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24 में पहली बार, मानसिक स्वास्थ्य, इसके महत्व और नीतिगत सिफारिशों पर इसके प्रभाव के बारे में बात की गई। व्यक्तिगत और राष्ट्रीय विकास के लिए मुख्य रूप से प्रभावशाली संचालक के रूप में मानसिक स्वास्थ्य को स्वीकार करते हुए, सर्वेक्षण में कहा गया है कि राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएमएसएस) 2015-16 के अनुसार, भारत में 10.6 प्रतिशत वयस्क मानसिक विकारों से पीड़ित हैं, जबकि मानसिक विकारों के लिए उपचार का अंतराल विभिन्न विकारों के लिए 70 प्रतिशत और 92 प्रतिशत के बीच है। इसके अलावा, मानसिक बीमारी की स्थिति ग्रामीण क्षेत्रों (6.9 प्रतिशत) और शहरी गैर-मेट्रो क्षेत्रों (4.3 प्रतिशत) की तुलना में शहरी मेट्रो क्षेत्रों में (13.5 प्रतिशत) थी। एनसीईआरटी स्कूलों के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण का हवाला देते हुए सर्वेक्षण ने कॉविड-19 महामारी के कारण किशोरों में खराब मानसिक स्वास्थ्य के बढ़ते मामलों पर प्रकाश डाला है। सर्वेक्षण में 11 प्रतिशत छात्रों ने चिंता प्रदान करना, 14 प्रतिशत ने अत्यधिक भावुक होने और 43 प्रतिशत ने मनोदशा में उतार-चढ़ाव के अनुभव की बात कही है।

सर्वेक्षण में बताया गया है कि समग्र आर्थिक स्तर पर ही मानसिक स्वास्थ्य विकार अनुपस्थिति के कारण महत्वपूर्ण उत्पादकता हानि, उत्पादकता में कमी, दिवंगता, स्वास्थ्य देखभाल लागत में वृद्धि आदि। तनावपूर्ण जीवन स्थितियाँ, वित्तीय अस्थिरता और तर्की के अवसरों की कमी के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य के जोखिम को प्रभावित करने वाली गरीबी के भी प्रमाण हैं और ये मनोवैज्ञानिक संकट को बढ़ाते हैं।

अधिकतम प्रभाव सुनिश्चित करने के लिए मौजूदा कमियों को दूर करने के लिए आर्थिक सर्वेक्षण मानसिक स्वास्थ्य सेवा में प्रगति को गति देने के लिए प्रभावी कार्यान्वयन की आवश्यकता पर जोर दिया गया है।

प्रमुख पहल- बेहतर कल के लिए

सकार द्वारा किए गए प्रयास

भारत सरकार ने राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य एवं तंत्रिका विज्ञान संस्थान (निमहंस), बेंगलुरु के माध्यम से 2016 में राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएमएसएस) कराया था। सर्वेक्षण के अनुसार, 18 वर्ष से अधिक आयु के लगभग 10.6 प्रतिशत वयस्क मानसिक विकारों से पीड़ित हैं। इस समस्या से निपटने के लिए, राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम (एनएमएससी) के प्रमुख घटक, जिला मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम (डीएमएसपी) को 767 जिलों में शुरू किया गया है और इसमें राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों को सहायता प्रदान की गई है। डीएमएसपी का उद्देश्य स्कूलों और कॉलेजों के लिए आत्महत्या रोकथाम, कार्यस्थल तनाव प्रबंधन, जीवन कौशल प्रशिक्षण और परामर्श जैसी सेवाएँ प्रदान करना है। जिला अस्पतालों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (सीएचसी) और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (पीएचसी) में उपलब्ध सुविधाएँ बाह्य रोगी सेवाएँ, परामर्श, मनो-सामाजिक हस्तक्षेप, गंभीर मानसिक विकारों के लिए निरंतर देखभाल, दवाएँ, आउटरीच कार्यक्रम और एम्बुलेंस सेवाएँ प्रदान कर रही हैं। इसके अतिरिक्त, जिला स्तर पर 10-बेड की इन-पेयेंट

सुविधा उपलब्ध है। इसके अलावा, उनके देखभाल पैकेजों में मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं को एकीकृत करते हुए 1.73 लाख से अधिक उप स्वास्थ्य केंद्रों (एसएचसी) और पीएचसी को आयुष्यान आरोप्य मॉडलों में अपग्रेड किया गया है।

मानसिक स्वास्थ्य सेवा क्षमता को और बढ़ाने के लिए, सरकार ने एनएमएसपी के तृतीयक देखभाल घटक का विस्तार किया है। इसमें मानसिक स्वास्थ्य संस्थानों के पीजी विभागों में छात्रों की सीटें बढ़ाने के साथ-साथ तृतीयक स्तर की उपचार सुविधाएँ प्रदान करने के लिए 25 उच्चस्तरीय केंद्रों को मंजूरी देना शामिल है। इसके अतिरिक्त, 19 सरकारी मेडिकल कॉलेजों में मानसिक स्वास्थ्य के 47 खातकोतर विभागों की क्षमता में विस्तार किया गया है, साथ ही 22 नए स्थापित एम में मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं का प्रावधान किया गया है। पूरे भारत में, 47 सरकारी मानसिक अस्पताल हैं, जिनमें तीन केंद्रीय मानसिक संस्थान शामिल हैं। राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु, लोकप्रिय गोपीनाथ बोरोदोलोई क्षेत्रीय मानसिक स्वास्थ्य संस्थान, तेजपुर, असम और केंद्रीय मनोगो संस्थान, रांची।

एक महत्वपूर्ण पहल के तहत, सरकार ने गुणवत्तापूर्ण मानसिक स्वास्थ्य परामर्श और देखभाल सुधार के लिए 10 अक्टूबर, 2022 को राष्ट्रीय टेली मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम (एनटीएमएसपी) शुरू किया। 36 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में कुल 53 टेली मानस सेल काम कर रहे हैं। 08 अक्टूबर, 2024 तक हेल्पलाइन नंबर पर 14.5 लाख से अधिक कॉल के माध्यम से समाधान को लेकर बातचीत की गई।

निकर्ष-विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस हमारे जीवन और कार्यस्थलों पर मानसिक स्वास्थ्य देखभाल के महत्व की ओर महत्वपूर्ण ध्यान दिता है। मानसिक स्वास्थ्य और काम आपस में करीब से जुड़े होने के कारण, सरकारों, नियोक्ताओं और हितधारकों के लिए सुरक्षित, समावेशी और सहयोग वातावरण बनाने के लिए कार्रवाई करना आवश्यक है, जिससे मानसिक स्वास्थ्य बेहतर हो सके। डब्ल्यूएचओ और डब्ल्यूएफएमएच द्वारा संचालित वैश्विक पहल इस दिशा में अच्छे काम कर रही है, लेकिन जागरूकता बढ़ाने, कलंक को मिटाने और मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँचने में सुधार करने के लिए अभी भी बहुत काम किया जाना बाकी है।

नीतियों, सर्वेक्षणों और कार्यक्रमों के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों से निपटने के लिए भारत के हॉलिया प्रयास सराहनीय हैं। मानसिक स्वास्थ्य संस्थानों को बढ़ावर और सेवाओं को प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा में एकीकृत करके, भारत, उपचार मामलों के अंतर को कम करने और देश के मानसिक स्वास्थ्य बोझ को खत्म करने की दिशा में कदम बढ़ा रहा है। जैसे-जैसे ये प्रयास जारी हैं, ध्यान समावेशी प्रणाली बनाने पर बना रहना चाहिए जो व्यक्तियों को काम और समाज दोनों में तर्की करने में सक्षम बनाए। आने वाले वर्षों में, सरकारों, संगठनों और व्यक्तियों के बीच निरंतर सहयोग यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि मानसिक स्वास्थ्य देखभाल सुलभ, प्रभावी और कलंक से मुक्त हो। यह एक ऐसा भविष्य बनाने में मदद करेगा जहाँ मानसिक स्वास्थ्य को एक मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी जाएगी, और प्रत्येक व्यक्ति अच्छे से काम करते हुए अपना जीवन जी सके।

मानसिक स्वास्थ्य दिवस-विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस एक महत्वपूर्ण स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम है जिसे हर साल 10 अक्टूबर को मनाया जाता है। इसके माध्यम से जागरूकता प्रसारित की जा सके और किसी के जीवन और समाज में मानसिक स्वास्थ्य के महत्व को बढ़ावा दिया जा सके। इस दिन का उद्देश्य लोगों को मानसिक बीमारी के बारे में शिक्षित करना और प्रोत्साहित करना है। साथ ही मानसिक स्वास्थ्य का समर्थन करने के लिए जीवन के सभी पहलुओं में एक स्वस्थ वातावरण स्थापित करना है।

संपादकीय

मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्या से जूझता किशोर जीवन

विश्व भर में, 10 से 19 वर्ष आयु वर्ग में हर सात में से एक बच्चा व किशोर, मानसिक स्वास्थ्य अवस्था, जैसे कि बेचौनी, अक्सर और व्यवहार सम्बन्धी समस्या के साथ जीवन गुजार रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन और संयुक्त राष्ट्र बाल कोष द्वारा 9 अक्टूबर को प्रकाशित एक नई रिपोर्ट जारी की गई। उक्त रिपोर्ट में बेहतर मानसिक स्वास्थ्य समर्थन के लिए समुदाय-आधारित मॉडल की पैरवी की गई है। एक अनुमान के अनुसार, एक-तिहाई से अधिक मामलों में मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्या 14 वर्ष से पहले उभरती है। 50 फीसदी मामलों में यह 18 वर्ष से पहले सामने आती है। यह रिपोर्ट, विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस से ठीक पहले प्रकाशित की गई है, जिसे हर वर्ष 10 अक्टूबर को मनाया जाता है। विशेषज्ञों का मानना है कि समय रहते, जल्द से जल्द कारवाही बेहद अहम है ताकि बच्चों और युवजनों को उनमें निहित सम्भावनाओं को पूर्ण रूप से साकार करने में मदद दी जा सके। मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े लक्षणों से जूझ रहे अधिकांश युवाओं के लिए, देखभाल सेवाओं तक पहुँच मुश्किल होती है। इसकी वजह व्यवस्थागत अवरोध, जैसेकि सेवाओं की कम उपलब्धता, ऊँची कीमत और ऐसी मदद मांगने में कथित कलंक की सामाजिक धारणा है। रिपोर्ट में जोर देकर कहा गया है कि बच्चों व किशोरों में मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं को समर्थन देने के लिए सामूहिक रूप से प्रयास किए जाने होंगे। हमें स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक संरक्षा और समुदाय आधारित व्यवस्था का निर्माण करना होगा, ताकि युवाओं के लिए मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं का एक व्यापक नेटवर्क तैयार हो सके। रिपोर्ट में उन लाखों बच्चों की ओर भी ध्यान आकृष्ट किया गया है, जोकि मानसिक स्वास्थ्य अवस्था में जीवन गुजार रहे हैं, और अपने परिवारों के बावजूद किसी संस्थान आदि में भर्ती हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि ये तौर-तरीके उनके मानवाधिकारों का उल्लंघन हैं और इससे स्वास्थ्य व सामाजिक तौर पर खराब नतीजे सामने आते हैं। रिपोर्ट के अनुसार, चरणबद्ध ढंग से संस्थागत देखभाल के मॉडल को खत्म करना होगा और समुदाय-आधारित सेवाओं को अपनाना होगा, ताकि बच्चे अपने परिवारों व समुदायों के साथ फल-फूल सकें। इससे उनकी शिक्षा, सामाजिक सम्बन्धों व समग्र विकास में मदद मिल सकेगी। साथ ही मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देना होगा। प्रभावित व्यक्ति को निदान कराने तथा उसके लक्षणों के आधार पर उचित मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित और सहयता प्रदान कराने में मदद करनी होगी। इस प्रकार के प्रयासों से इस समस्या से जूझ रहे बच्चों और लोगों को जल्द से जल्द सामान्य जीवन प्रदान किया जा सकता है।

अफ्रीकी हाथी शंकर हुआ जंजीर से मुक्त

नई दिल्ली। केंद्रीय पर्यावरण एवं वन राज्यमंत्री कीर्ति वर्धन सिंह का अफ्रीकी हाथी शंकर के स्वास्थ्य और निवास को दुरुस्त करने का प्रयास रंग लाया। 11 अक्टूबर को शंकर जंजीर से मुक्त हो गया है और अपने बाड़े में खूब चलकदमी करता नजर आया। केंद्रीय राज्यमंत्री सिंह ने अपने सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर शंकर हाथी का वीडियो पोस्ट करते हुए लिखा कि मुझे यह बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि दिल्ली चिड़ियाघर में अफ्रीकी हाथी शंकर को जंजीर मुक्त कर दिया गया है। पिछले 48 घण्टे से उसकी सेहत, आहार, व्यवहार, पर चिड़ियाघर, टीम वनतारा, जामनगर, गुजरात, विशेषकर उनकी टीम के नीरज, यदुराज, दक्षिण अफ्रीका के हाथी विशेषज्ञ डॉ एड्रियन व फिलीपीस से आए महावत माइकल पेनी नजर रखे थे। 9 अक्टूबर को उक्त टीम के साथ बाड़े की निरीक्षण कर दिशा निर्देश दिया था। सकारात्मक असर दिखने लगा। शंकर के व्यवहार में पहले की तुलना में काफी सुधार हुआ है। शंकर के बाड़े को और अधिक सुविधाजनक बनाने के लिए पावर फेंसिंग, ट्रीटमेंट पेन वॉल एवं रबड़ मैट तैयार करने हेतु आवश्यक मेजरमेंट कार्य पूरा कर लिया गया है। शंकर के व्यवहार एवं दिनचर्या के गहन निरीक्षण के उपरांत शंकर के लिए डायट प्लान व उसे व्यस्त रखने के लिए अनेक गतिविधियों की रूपरेखा भी तैयार की जाएगी। केंद्रीय राज्यमंत्री सिंह का शंकर के शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार का प्रयास आधिकारिक रंग लाया। उनके निदेशानुसार, उक्त टीम लगातार 24 घण्टे से उसके व्यवहार पर नजर रख रही थी और वेटेरीनरी डॉक्टरों की टीम और प्रशिक्षित महावतों की एक टीम द्वारा निरंतर निगरानी कर उसे शांत करने की कोशिश की जा रही थी। 11 अक्टूबर को टीम आधिकारिक शंकर को उसकी जंजीरों से मुक्त कराने में सफल रही। वह भी बिना किसी दवा के टीम के सदस्य प्रयास में सफल रहे। चिड़ियाघर के वर्तमान महावतों को शंकर के साथ सुगम व्यवहार बनाने के लिए प्रशिक्षित भी किया जाएगा। शंकर के व्यवहार एवं दिनचर्या का गहन निरीक्षण उपरांत शंकर के लिए एक उपर्युक्त डाइट प्लान तैयार किया जाएगा। शंकर को पूरा दिन व्यस्त रखने हेतु गतिविधियों की एक विस्तृत कार्ययोजना भी बनायी जाएगी। केंद्रीय राज्यमंत्री सिंह ने फिलीपीस से आए महावत माइकल से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए बातचीत की एवं शंकर की स्थिति से अवगत हुए। शंकर पहले की तुलना में तनाव मुक्त दिखा।



विशेषकर उनकी टीम के नीरज, यदुराज, दक्षिण अफ्रीका के हाथी विशेषज्ञ डॉ एड्रियन व फिलीपीस से आए महावत माइकल पेनी नजर रखे थे। 9 अक्टूबर को उक्त टीम के साथ बाड़े की निरीक्षण कर दिशा निर्देश दिया था। सकारात्मक असर दिखने लगा। शंकर के व्यवहार में पहले की तुलना में काफी सुधार हुआ है। शंकर के बाड़े को और अधिक सुविधाजनक बनाने के लिए पावर फेंसिंग, ट्रीटमेंट पेन वॉल एवं रबड़ मैट तैयार करने हेतु आवश्यक मेजरमेंट कार्य पूरा कर लिया गया है। शंकर के व्यवहार एवं दिनचर्या के गहन निरीक्षण के उपरांत शंकर के लिए डायट प्लान व उसे व्यस्त रखने के लिए अनेक गतिविधियों की रूपरेखा भी तैयार की जाएगी। केंद्रीय राज्यमंत्री सिंह का शंकर के शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार का प्रयास आधिकारिक रंग लाया। उनके निदेशानुसार, उक्त टीम लगातार 24 घण्टे से उसके व्यवहार पर नजर रख रही थी और वेटेरीनरी डॉक्टरों की टीम और प्रशिक्षित महावतों की एक टीम द्वारा निरंतर निगरानी कर उसे शांत करने की कोशिश की जा रही थी। 11 अक्टूबर को टीम आधिकारिक शंकर को उसकी जंजीरों से मुक्त कराने में सफल रही। वह भी बिना किसी दवा के टीम के सदस्य प्रयास में सफल रहे। चिड़ियाघर के वर्तमान महावतों को शंकर के साथ सुगम व्यवहार बनाने के लिए प्रशिक्षित भी किया जाएगा। शंकर के व्यवहार एवं दिनचर्या का गहन निरीक्षण उपरांत शंकर के लिए एक उपर्युक्त डाइट प्लान तैयार किया जाएगा। शंकर को पूरा दिन व्यस्त रखने हेतु गतिविधियों की एक विस्तृत कार्ययोजना भी बनायी जाएगी। केंद्रीय राज्यमंत्री सिंह ने फिलीपीस से आए महावत माइकल से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए बातचीत की एवं शंकर की स्थिति से अवगत हुए। शंकर पहले की तुलना में तनाव मुक्त दिखा।



लाल साईं उड़ो लाल सिंधी नाटक का हुआ भव्य मंचन

जयपुर। सिन्धी समुदाय के इष्टदेव भगवान श्री झुलेलाल के अस्सू छुट्टे महोत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की प्रेरणा से स्वामी मनोहर लाल जी साईं मंगू राम जी और अमरपुर की संत मंडली के तत्वाधान में प्रेम प्रकाश परिवार जयपुर, पूज्य सिंधी सेंट्रल पंचायत, जयपुर महानगर के सौजन्य से चेटी चंड महोत्सव समिति (सिंधियत) के कलाकारों द्वारा भगवान श्री झुलेलाल की जीवन लीला पर आधारित सिन्धी संगीतमय नाटक 'लाल साईं उड़ो लाल' का भव्य एवं रंगारंग मंचन सिन्धी सागर भवन, प्लॉप नगर, जयपुर में 6 अक्टूबर को किया गया। नाटक में दर्शाया गया कि उस समय के कर शसक मिर्ख बादशाह का शासन था जिसने फरमान जारी किया था कि जो धर्म बादशाह का होगा, जनता का भी वही धर्म होना चाहिए। आदेश न मानने वालों को जबरदस्ती धर्म परिवर्तन करने को कहा जाता। उस समय झुलेलाल जल देवता की पूजा किया करती थी। बादशाह मिर्ख शाह के जुल्मों से परेशान होकर सभी मिलकर सिंधु नदी के किनारे जल देवता का आह्वान करते हैं और



रंगीण एवं वरिष्ठ साहित्यकार गोबिंदराम माणा थे। निर्देशन किया था वरिष्ठ रंगमंच कलाकार और निर्देशक दिलीप रामचंदानी ने। नाटक के संयोजक हेमंत खटवानी थे। मंच संचालन नमोशा खेमनानी तथा सिन्धी स्तुति पर नृत्य ड. पूरम केसवानी ने किया। नाटक के कलाकारों में देव सागर गोविन्दानी, हेमंत खटवानी, रिनी मिराजा, संतोष मूलवानी, सुरेश खटवानी, सुन्दर लाल तोरानी, धर्मदास खत्री, अशोक छबड़ा, धर्मदेव मूलवानी, महेश कुमार किशानानी, नरेंद्र आसुवानी, चांदनी इसरानी, चमलकारों से सबक सिखाया और सारी जनता को अपने अपने धर्म को साथ मिलकर रहने का उपदेश दिया। पूज्य सिंधी सेंट्रल पंचायत के अध्यक्ष गिरधारी मनकानी और महासचिव जेठानंद नन्दवानी ने नाटक की भूरि भूरि प्रशंसा की और विचार प्रकट करते हुए कहा कि ऐसे नाटक बार बार होते रहने चाहिए जिससे नई पीढ़ी को भी अपने धर्म और भगवान झुलेलाल के बारे में पूरी जानकारी मिल सके। नाटक के लेखक जयपुर के वरिष्ठ साहित्यकार एवं रंगमंच कलाकार रमेश

टेली मानस के दो वर्ष पूरे होने पर मंत्रालय ने उत्सव मनाया

नई दिल्ली। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने 10 अक्टूबर को विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस पर राष्ट्रीय टेली मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम, टेली मानसिक स्वास्थ्य सहायता और राज्यों में नेटवर्किंग (टेली मानस) के दो वर्ष पूरे होने का उत्सव मनाया। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की अतिरिक्त सचिव एवं राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) की प्रबन्धक निदेशक आराधना पटनायक ने विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के भारत में प्रतिनिधि डॉ. रोडरिको एच. ओफिन, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय में संयुक्त सचिव सौरभ जैन, राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य एवं ज्ञान विज्ञान संस्थान (निमहॉस) की निदेशक डॉ. प्रतिमा मूर्ति और मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में टेली मानस ऐप और टेली मानस वीडियो कॉल सुविधा का शुभारंभ किया। टेली मानस ऐप एक व्यापक मोबाइल प्लेटफॉर्म है जिसे मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के लिए सहायता प्रदान करने के



लिए विकसित किया गया है। ऐप में स्व-देखभाल, तनाव के संकेतों को पहचानने, तनाव, चिंता और भावनात्मक संघर्षों के शुरूआती लक्षणों को प्रबंधित करने सहित कई तरह की जानकारी उपलब्ध है। यह ऐप इसका उपयोग करने वाले व्यक्ति को मानसिक चुनौतियों, खेलों और माइंडफुलनेस अभ्यासों के माध्यम से उपयोगकर्ता को अनुकूल अनुभव प्रदान करने में मदद करता है। यह ऐप उपयोगकर्ताओं को निःशुल्क कनेक्ट करने और देश भर में प्रशिक्षित मानसिक स्वास्थ्य पेशेवरों के माध्यम से गोपनीय मानसिक स्वास्थ्य सहायता प्राप्त करने में मदद करेगा, जो तत्काल परामर्श के लिए 24x7

उपलब्ध है। टेली मानस में वीडियो परामर्श पहले से ही मौजूद ऑडियो कॉलिंग सुविधा का एक और अपग्रेड है। इसमें मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ कॉल करने वाले के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने और उसका चिकित्सकीय इतिहास जानने के लिए ऑडियो कॉल एस्केलेशन ले रहे हैं। इसके द्वारा किसी भी निष्कर्ष की पुष्टि के लिए कॉल करने वाले व्यक्ति का सॉफ्ट शारीरिक या मानसिक स्थिति परीक्षा ली जा सकती है। ये सुविधा कर्नाटक, जम्मू और कश्मीर और तमिलनाडु राज्यों में शुरू की जाएगी और इसके बाद इसका पूरे देश में विस्तार किया जाएगा।

मानसिक स्वास्थ्य एवं नशा मुक्ति पोस्टर का हुआ विमोचन

जयपुर। विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर 10 अक्टूबर को चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खीवसर ने अपने राक्षसीय आवास पर मानसिक स्वास्थ्य तथा नशा मुक्ति से सम्बन्धित पोस्टर का विमोचन किया। चिकित्सा मंत्री ने कहा कि वर्तमान में भगदौड़ भरी जीवनशैली से बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक अक्सर सहित विभिन्न मानसिक विकारों से ग्रसित हो रहे हैं। राज्य सरकार प्रदेशवासियों को बेहतर मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्धता के साथ कदम उठा रही है। उन्होंने कहा कि युवा पीढ़ी अच्छे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए स्वस्थ एवं संतुलित जीवनशैली अपनाए। पोस्टर विमोचन के अवसर पर मनोचिकित्सा केंद्र जयपुर



के अधीक्षक डॉ. ललित बत्रा, सर्वांग मानसिक चिकित्सा महाविद्यालय में मनोचिकित्सा विभागाध्यक्ष डॉ. आलोक त्यागी, राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के राज्य नोडल अधिकारी डॉ. सांवरमल स्वामी, उप अधीक्षक डॉ. सुनील शर्मा, मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के जिला नोडल अधिकारी डॉ. राजेश शर्मा एवं वरिष्ठ आचार्य डॉ. योगेश सतीजा सहित संबन्धित अधिकारी उपस्थित रहे। विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर सर्वांग मानसिक चिकित्सा महाविद्यालय से स्टेज्यु सकिंगल टैल मेटल हेल्थ रन का भी आयोजन किया गया। प्रधानाचार्य डॉ. दीपक माहेश्वरी ने मेटल हेल्थ रन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इसमें लगभग 200 लोगों ने भाग लिया।

अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस: उज्वल भविष्य के लिए बालिकाओं का सशक्तिकरण

हर साल 11 अक्टूबर को मनाया जाने वाला अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस, दुनिया भर में बालिकाओं को सशक्त बनाने और उनके लिए समाज में सुरक्षित माहौल बनाने की जरूरत को पुरजोर तरीके से याद दिलाता है। जहाँ बालिकाएँ आगे बढ़ सकें, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे अपने भविष्य का नेतृत्व करने के लिए पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर हैं। यह दिन बालिकाओं के लिए लैंगिक समानता, शिक्षा और अवसरों के महत्व पर प्रकाश डालता है।

बीजिंग में 1995 में महिलाओं से संबंधित मुद्दों पर आयोजित पर विश्व सम्मेलन, दुनिया भर में महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ। देशों ने सर्वसम्मति से बीजिंग घोषणा-पत्र और प्लेटफॉर्म फॉर एक्शन को अपनाया, जो लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए स्थापित अब तक का सबसे प्रतिशोषित डॉका है। पहली बार, घोषणा में बालिकाओं के विशेष अधिकारों को विशेष रूप से स्वीकार किया गया और उनकी अनूठी आवश्यकताओं एवं चुनौतियों का समाधान करने के लिए व्यापक वैश्विक कार्रवाई का आह्वान किया गया।

सयुक्त राष्ट्र महासभा ने 19 दिसंबर, 2011 को संकल्प संख्या 66/170 को पारित किया और 11 अक्टूबर को 'अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा की गई। यह दिन बालिकाओं के अधिकारों और वैश्विक स्तर पर उनसे जुड़ी चुनौतियों

के प्रति जागरूक करने के लिए समर्पित है। अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस बालिकाओं को सशक्त बनाने और उनके मानवाधिकारों को सुरक्षित करने को तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डालता है। यह दिवस एक स्मरण के रूप में कार्य करता है कि किशोरियों को शिक्षा, सुरक्षा और स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में लड़कों को तरह समान अवसर मिलने चाहिए। यदि बालिकाओं को उनके प्रारंभिक वर्षों के दौरान प्रभावी ढंग से समानता दिया जाता है, तो उनमें भविष्य की अर्थिक, उद्यमी, नेता और परिवर्तन की वाहक बनने की शक्ति है, जो दुनिया भर में सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन को आगे बढ़ाएंगी।

ग्लोबल विजन फॉर द फ्यूचर- थीम 2024

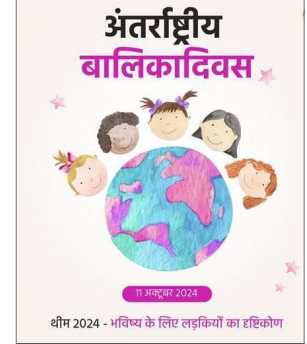
इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस की थीम ग्लोबल विजन फॉर द फ्यूचर है। यूनिसेफ के शोध से पता चलता है कि कई चुनौतियों का सामना करने के बावजूद बालिकाएँ बेहतर भविष्य के लिए आशावादी और दृढ़ संकल्पित हैं। दुनिया भर में हर दिन, बालिकाएँ एक ऐसे विजन की दिशा में काम कर रही हैं जिसमें वे सुरक्षित, सम्मानित और सशक्त हों। लेकिन वे इसे अकेले हासिल नहीं कर सकतीं। उन्हें सहयोगियों की आवश्यकता है। सरकारें, समुदाय और व्यक्ति- जो उनकी जरूरतों को सुनें और उनके बारे में प्रतिक्रिया दें। जब बालिकाओं को सही संसाधनों और अवसरों के साथ समर्थन दिया जाता

है, तो उनकी क्षमता असीमित होती है। साथ ही जब वे नेतृत्व करती हैं, तो सकारात्मक प्रभाव उनके परिवारों, समुदायों और अर्थव्यवस्थाओं तक होता है। **बालिकाओं के अधिकारों की वकालत क्यों?** दुर्भाग्य से, दुनिया भर में लाखों बालिकाओं के लिए, उनका लैंगिक आधार अभी भी उनकी पसंद को प्रतिबंधित करता है, उनके भविष्य को सीमित करता है, और उन्हें बुनियादी अधिकारों से वंचित करता है। हालांकि, ये चुनौतियाँ इतनी भी बड़ी नहीं हैं कि इनसे निपटा न जा सके। सही पहल और सामूहिक प्रयासों के साथ, हम एक ऐसे भविष्य की ओर तेजी से बढ़ सकते हैं, जहाँ हर बालिका को स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और सपत्न होने के लिए आवश्यक कौशल तक पहुँच हो।

भारतीय संविधान में लैंगिक समानता

भारतीय संविधान लैंगिक समानता के सिद्धांत को बढ़ावा देता है। यह न केवल महिलाओं को समानता की गारंटी देता है बल्कि राज्य को सदियों से चले आ रहे सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक भेदभाव को दूर करने के लिए सकारात्मक कदम उठाने का अधिकार भी देता है।

महिलाओं को मौलिक अधिकार दिए गए हैं जो उन्हें लैंगिक आधार पर भेदभाव से बचाते हैं। वे कानून के तहत समान सुरक्षा की भी हकदार हैं। प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह महिलाओं की



गिरमा को बनाए रखें। महिलाओं का सशक्तिकरण नीति से कहीं बढ़कर है। यह एक बदलाव लाने वाली प्रक्रिया है जो महिलाओं को आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में समान अवसरों की सुविधा देती है। इसमें घर के भीतर और बाहर दोनों जगह निर्माण लेने की क्षमता एवं बेहतर भविष्य के लिए सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित करने की क्षमता शामिल है।



जल संवय-जन भागीदारी-जन आंदोलन कार्यक्रम

प्रधानमंत्री के नेतृत्व में राजस्थान की जल परियोजनाएँ हो रही साकार : मुख्यमंत्री

'केच द रेन' कैम्पेन से जल संवय को मिलेगा बढ़ावा

जयपुर(नि.सं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश हर क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है। देश में जल संवय के क्षेत्र में 'केच द रेन' कैम्पेन प्रधानमंत्री की अगुआई में चल रहा है। उन्होंने कहा कि यह अभियान देश में जन आंदोलन बनेगा, जिससे जन भागीदारी बढ़ेगी और जल संवय होगा। शर्मा गुजरात के सूरत में जल संवय-जन भागीदारी-जन आंदोलन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने राजस्थान की जल आवश्यकता को समझते हुए वर्ष 2003 में गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में प्रदेश को नर्मदा का पानी उपलब्ध करवाया। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में ही राजस्थान और मध्यप्रदेश के मध्य ईआरसीपी परियोजना का अमएओ तथा हरियाणा और राजस्थान के बीच यमुना जल समझौता हुआ। देवास परियोजना के तहत उदयपुर में जल उपलब्धता सुनिश्चित की जा रही है।

राजस्थान में सदियों से जल संरक्षण एक परंपरा

मुख्यमंत्री ने कहा कि राजस्थान में जल हमेशा से एक अनमोल संसाधन रहा है, इसलिए राजस्थान में जल संरक्षण एक परंपरा है। हमारे पूर्वजों ने जल संरक्षण की

आवश्यकता को गहराई से समझा और सीमित संसाधनों में भी डिग्री, कुंड और बावड़ी बनाने का काम किया। उन्होंने कहा कि सदियों से राजस्थान में टांके, तालाब, खड़ीन, नाड़ियाँ, पाट और जोहड़ के माध्यम से वर्षा जल को सहेजने का काम किया जा रहा है।

'केच द रेन' कैम्पेन का राजस्थान को मिलेगा लाभ

शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वर्षा जल संवय के लिए महत्वपूर्ण अभियान चलाया है। उन्होंने कहा कि राजस्थान में जल संवय के लिए प्रवासी राजस्थानियों का अपनी मातृभूमि के प्रति योगदान का निशय इस अभियान को मजबूती प्रदान करेगा। राजस्थान के हर जिले के प्रत्येक गाँव में चार जल संग्रहण संरचनाओं के निर्माण के लिए प्रवासी उद्यमियों का योगदान तय किया गया है। इससे जल संकट को दूर करने में मदद मिलेगी। यह अभियान आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवनदायिनी साबित होने वाला है। मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान 2.0 के तहत हो रहे जल संरक्षण के कार्य

मुख्यमंत्री ने कहा कि राजस्थान में मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान 2.0 चलाया जा रहा है। प्रथम चरण में इस अभियान के तहत 5 हजार से अधिक गाँवों में 3 हजार 500 करोड़ रुपये की लागत से 1 लाख 10 हजार कार्य करवाये जा रहे हैं। यह अभियान राज्य में जल संरक्षण और जल



स्वावलंबन की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

उन्होंने कहा कि राजस्थान में इस वर्ष अच्छी वर्षा होने से प्रदेश के बांध भर हूए हैं। शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में वर्ष 2014 के बाद जो परिवर्तन आया है, उसे सभी महसूस कर रहे हैं। देश में गरीब कल्याण की योजनाएँ, विकास योजनाएँ, आतंकवाद-नक्सलवाद का खाला और दुनिया में बढ़ता भारत का गौरव देश के हर नागरिक ने देखा है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री गुजरात श्री भूपेन्द्र पटेल, मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश डॉ. मोहन यादव, केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री श्री सीआर पाटिल, उप मुख्यमंत्री बिहार श्री सम्राट चौधरी, संसदीय कार्य मंत्री श्री जोगाराम पटेल, सांसद श्री लुम्बाराम चौधरी सहित बरिष्ठ अधिकारियों एवं बड़ी संख्या में प्रवासी राजस्थानी उपस्थित रहे।

पेज नं. 1 का शेष

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस:.....

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस का महत्व

यह सर्वविदित है कि एक व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य एक स्वस्थ समाज और राष्ट्र को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक अच्छा और संतुलित जीवन प्राप्त करने के लिए मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य का होना अनिवार्य है। कोविड महामारी और युद्ध जैसी हाल की अभूतपूर्व वैश्विक घटनाओं ने मानसिक स्वास्थ्य के लिए एक वैश्विक संकट पैदा कर दिया, जिससे दुनिया भर में लाखों लोग प्रभावित हुए। जिसके लिए निश्चित रूप से दुनिया भर के संगठनों और नीति निर्माताओं के ध्यान और सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता है ताकि मानसिक स्वास्थ्य का समर्थन करने के लिए आवश्यक उपचार अंतराल और सुविधाओं से लड़ने में मदद मिल सके। विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस विभिन्न जागरूकता अभियान आयोजित करके और दूसरों से भाग लेने और अपने आस-पास के मानसिक स्वास्थ्य के मूल्यों को समझने के अवसर का उपयोग करने का आग्रह करके मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों से लड़ने के लिए लोगों को एक साथ लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह प्रभावित लोगों को अपने विचारों को साझा करने और अपनी पीड़ा के बारे में मुखर होने और दूसरों का समर्थन करने के लिए आवश्यक कार्रवाई करने के लिए विभिन्न संबंधित समुदायों से जुड़ने के लिए वैश्विक मंच भी प्रदान करता है।

इस वर्ष, 2024, विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस की थीम कार्यस्थल पर मानसिक स्वास्थ्य रखी गई। यह थीम मानसिक स्वास्थ्य और कार्य के बीच महत्वपूर्ण संबंध को उजागर करती है। सुरक्षित, स्वस्थ कार्य वातावरण मानसिक स्वास्थ्य के लिए एक सुरक्षात्मक कारक के रूप में कार्य कर सकता है। कलंक, भेदभाव और उत्पीड़न और अन्य खराब कार्य स्थितियों जैसे जोखिमों के संपर्क में आने सहित अस्वास्थ्यकर स्थितियों मानसिक स्वास्थ्य, जीवन की समग्र गुणवत्ता और परिणामस्वरूप, काम पर भागीदारी या उत्पादकता को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण जोखिम पैदा कर सकती हैं। वैश्विक आबादी के 60 प्रतिशत के काम में लगे होने के कारण, यह सुनिश्चित करने के लिए तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता है कि काम मानसिक स्वास्थ्य के लिए जोखिमों को रोकता है और काम पर मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा और समर्थन करता है।

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस का इतिहास

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस पहली बार 10 अक्टूबर 1992 को विश्व मानसिक स्वास्थ्य महासंघ द्वारा आयोजित किया गया था, जो एक वैश्विक मानसिक स्वास्थ्य संगठन है जिसकी उपस्थिति 150 से अधिक देशों में है। इस पहल का प्रस्ताव 1992 में विश्व मानसिक स्वास्थ्य महासंघ के उप महासचिव रिचर्ड हंटर ने रखा था। 1994 तक यह दिवस बिना किसी विशेष थीम के मनाया जाता था। यह मुख्य रूप से मानसिक स्वास्थ्य के सामान्य मुद्दों के बारे में लोगों को शिक्षित करने पर केंद्रित था। बाद में 1994 में, तत्कालीन विश्व मानसिक स्वास्थ्य महासंघ के महासचिव यूजीन बांडी के सुझावों के आधार पर, इस दिवस को थीम के आधार पर मनाया जाने लगा और वर्ष 1994 का थीम था पूरे विश्व में मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार करना। तब से, मानसिक स्वास्थ्य के लिए विश्व महासंघ ने मानसिक स्वास्थ्य मुद्दों, इसकी रोकथाम और मानसिक रूप से प्रभावित लोगों के लिए बेहतर अवसर बनाने के लिए लोगों को शिक्षित करने और बढ़ावा देने के लिए एक विशेष थीम की घोषणा की।



iTVoice® **all things tech.**

India's Premier IT Magazine & First Daily Tech News OTT



Magazines & Newspapers



Highest Digital Presence



www.itvoice.in

PM Narendra Modi & Bill Gates meet in New Delhi



iTVoice

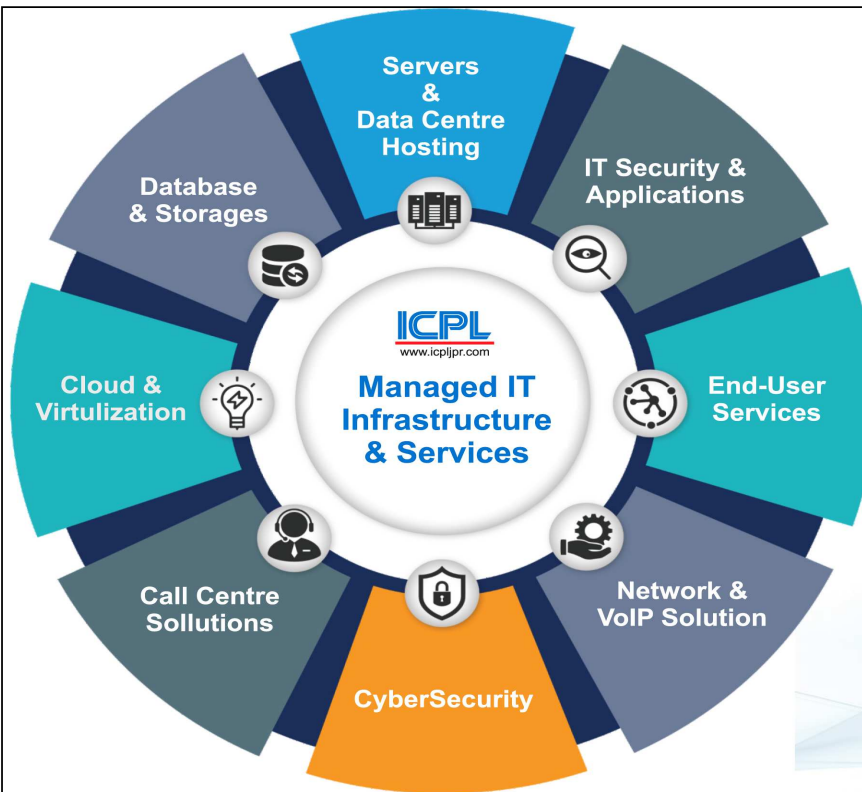
Daily Tech News & Podcasts



Contact for Print & Digital Marketing

+91 141 4014911

info@itvoice.in



ICPL

www.icpljpr.com

Professional IT Support

- Domain & Hosting
- Web Development
- Customized Software Solution
- Web Operation
- Client / Server Management
- Network Maintenance
- Service Desk Support
- Customized IT Support Services
- Dealing in all Major Brands



Informatic Computech Private Limited

Jaipur - Rajasthan (Ph.) +91-141-2280510 md@icpljpr.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक तरुण कुमार टांक के लिये महारानी प्रिन्टर्स प्लॉट नं. 17, माँ वैष्णो देवी नगर, कालवाड़ रोड, जयपुर से मुद्रित एवं 52/121, वीरतेजाजी रोड, मानसरोवर, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक-तरुण कुमार टांक Email: mahanagarstambh@gmail.com